हेमराज बंसल

रचना संग्रह 2015

व्यंग्य
मृत्यु प्रबंधन

दादाजी बहुत बीमार हैं। डाक्टरर्स ने उन्हें वैंटीलेटर पर डाल रखा है। जब तक वैंटीलेटर पर हैं तब तक सलामत हैं। वेंटीलेटर से उतारते ही कुछ भी हो सकता है। घर में दादीजी का रो रो कर बुरा हाल।

''हे भगवान! उनको ठीक कर दे, उनकी बीमारी मुझे दे दे। मेरी उम्र भी उन्हें लग जाये। मुझे उठा ले। उन्हें बचा ले।''

पास खड़ा पोता बोला, ''दादीजी! कुछ दिनों पहले आप बीमार हुई थी ना, तब दादाजी ने भी ऐसे ही कहा था। आप ठीक हो गई और अब दादाजी बीमार हो गये। लगता है भगवान ने दादाजी की प्रार्थना सुन ली।''

वैंटिलेटर नामक संयंत्र आने से एक नया विषय शुरु हुआ है। डाक्टर कहता है वैंटीलेटर से हटा और मरीज का टिकट कटा। अब आदमी का दिमाग खास कर बुद्वीजीवी का आगे की व्यवस्थाओं के बारे में सोचने में लग जाता है। उसे मैंने नाम दिया है डेथ मैनेजमेंट। मृत्यु प्रबंधन। जैसे फाइनेंस मैनेजमेंट, टाइम मैनेजमेंट वैसे ही डेथ मैनेजमेंट। पीएचडी करने वालों व साहित्यकारों के लिये एकदम नया विषय। इसके लिये अलग अलग शीर्षक, उपशीर्षक भी हो सकते हैं जैसे उत्तरी भारत के हिन्दु समाज में या आदिवासी समाज में मृत्यु प्रबंधन या हाड़ौती समाज के महाजन वर्ग में, ब्राह्मण समाज में मृत्यु प्रबंधन आदि आदि।

अब जन्म ही नहीं मृत्यु पर भी कुछ कुछ इंसानी नियंत्रण होने लगा है। जन्म पर तो! हम जानते ही हैं आजकल मुहुर्त देख कर सीजेरियन डिलेवरी हो रही है। ऐसे समय बच्चा कोख से बाहर आना चाहिये जब सारे ग्रह उच्च के हों। सब ही चक्रवर्ती सम्राट पैदा होंगे अब देश में।

हां तो मृत्यु प्रबंधन के लिये आदमी क्या करता है? फोन की लिस्ट ढूंढना, किस किस को सूचना देनी है? अच्छा सा फोटो ढूंढ कर उसकी बड़ी तस्वीर बनवाना। मुक्तिधाम में अच्छी सी भट्टी बुक करवाना। कर्मकांड वाले पंडितजी से मोलभाव करना। दुकान कार्यालय का काम निपटाना ताकि दो तीन दिन छुट्टी भी रहे तो किसी को तकलीफ न हो।

और सबसे महत्वपूर्ण है मारने के लिये मेरा मतलब वैंटिलेटर से मरीज को हटाने के लिये सही समय का चुनाव। ज्योतिषीजी को फोन लगाकर पूछना–

''पंडितजी मरने का अच्छा सा मुहूर्त बताओ। हमारे पिताजी का मोक्ष कराओ।''

ग्राहक को फोन करके कहना, ''देखो जो माल मंगाना हो आज ही मंगवा लो, हो सकता है दो तीन दिन दुकान बंद रहे।''

''क्यों?''

''हम पिताजी को वैंटीलेटर से हटवा रहे हैं न? पंडितजी ने शाम साढ़े पांच बजे का समय उत्तम बताया है।''

शनिवार रात को या छुट्टी के एक दिन पहले शाम को मारना मेरा मतलब वैंटीलेटर हटाना ठीक रहता है। दिन भर काम कर लो। अगले दिन दाह संस्कार और उससे अगले दिन तीसरा करके दुकान खोल लो। कोई कार्य दिवस वर्कींग डे खराब नहीं होता। अन्य व्यवस्थाओं के लिये भी रात भर का समय मिल जाता है। अखबार में देने व कार्ड में छपवाने

के लिये, शोक संदेश अच्छे साहित्यकार से लिखवाया जा सकता है। गुलाब के फूल, चंदन की लकड़ी, बैंड बाजा, मोक्ष रथ, आदि की बुकिंग, दाह संस्कार के सामानों की फेहरिस्त बनाना, तिया, उठावना आदि का समय स्थान तय करना, बैठक की जगह बनाना व समय तय करना,, नाई को बुलाना, हरिद्वार के टिकट मंगाना आदि बहुत सारी व्यवस्थाऐं। आजकल तो उठावने में माइक लगा कर मृतक की प्रशंसा में कशीदे पढ़ने के लिये भी व्यवसायिक साहित्यकारों की सेवाऐं ली जाने लगी है। समझदार महिलायें भी सूचना मिलते ही घर में मैनेजमेंट प्रबंधन में जुट जाती है। रसोई का, परांडे का हिसाब किताब सही कर लेती है। बच्चों और पति को समय से पूर्व खाना खिला देती है और घूंघट की आड़ में खुद भी निबट लेती है। पीहर वालों को शाल साड़ी लेकर सुबह जल्दी पहुंचने के लिये फोन कर देती है।

कभी ऐसा भी हो सकता है कि वैंटीलेटर से हटाने के बाद मरीज घर तक आ जाये और स्वस्थ लगने लगे। ऐसे में परिवार वालों की हालत खराब। रात को बारह बजे डाक्टर के पास साहब फोन करें,

'क्या डाक्टर साहब! आपसे आदमी न तो बचता है न ढंग से मरता है।'

डाक्टर आश्चर्य से कहेगा,

''क्या अभी तक बच रहे हैं? आप किस्मत वाले हैं, भगवान की आप पर बड़ी कृपा है। हमने तो अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी थी।''

परेशान साहब झल्ला कर कहेंगे,

''क्या बात करते हो? मैंने सारे रिश्तेदारों को फोन कर दिये हैं, अखबार में शोक संदेश दे दिया है। सारी व्यवस्थायें कर ली हैं। मैं यहां बहुत परेशान हूं और आपको मजाक सूझ रही है। मेरे को पक्का बताओ मर तो जायेंगे न?''

''हां हां उम्मीद रखो, सुबह तक तो मर ही जाना चाहिये।''

परेशान साहब अखबार के दफ्तर में फोन लगायेंगे।

'अरे भाई वो शोक संदेश रुकवाना है। क्या कहा? छप गया और अखबार भी निकल गये। हे भगवान अब मैं क्या करूं?''

महिनों से जिसे बचाने के लिये जी जान लगाये थे, इलाज, पूजा पाठ प्रार्थनायें हो रही थी अब उसे ही मारने के लिये . . .।

और दादाजी अगले दिन शाम तक भी नहीं गये तो।

''अभी तो दादाजी स्वस्थ लग रहे हैं। चिकित्सक ही हमें बेवकूफ बना रहे हैं।''

परिजनों से सलाह कर शोकसंदेश का खंडन निकलवाया जायेगा। अगले दिन अखबारों में शोक संदेश का खंडन छपेगा।

''उक्त शोक संदेश बिफोर टाइम अर्थात् समय से पूर्व छाप दिया गया था हमें खेद हैं।''

दूसरे दिन सुबह चौराहे पर लोग अखबार में खंडन पढ़ रहे हों और उधर से दादाजी की शव यात्रा गुजर रही हो, 'राम नाम सत्य है' तो . . . ।

मानों भगवान मंद मंद मुस्कराते हुये कह रहे हैं, ''तू कितनी ही तरक्की कर ले इंसान पर मरजी तो मेरी ही चलेगी।''

गीत
पति पत्नी के पावन रिश्ते में

(पैरोडी मूल गीत कवयित्री अनुपमा अंबर
पति नाम की इस बीमारी का उपचार जरूरी है।
चौबीस घंटे में इक फटकार जरूरी है।)

पति पत्नि के पावन रिश्ते में बहुत सुधार जरूरी है।
क्यूं सब हक पत्नि को, पति को भी कुछ अधिकार जरूरी है।
बहुत सहा मेमना बनकर अब सिंह दहाड़ जरूरी है।
पति पत्नि के पावन रिश्ते में बहुत सुधार जरूरी है।

तंग कपड़े पहन कर फिरती इतराती इठलाती,
बनठन कर सारे जग को अपना रूप दिखाती।
कालेज में पढ़ने जाती नित नये दोस्त बनाती,
ट्यूशन के बहाने ब्वायफ्रेंड संग पिक्चर जाती।
ऐसी कन्या से शादी के पहले सोच विचार जरूरी है।
ऐसी कन्या से शादी के पहले ही इनकार जरूरी है।
पति पत्नि के पावन रिश्ते में बहुत सुधार जरूरी है।

मेरा कोई आये तो पत्नी का सर चकराये।
सरदर्द का करके बहाना बिस्तर में सो जाये।
चाय पानी देने में भी बार बार झल्लाये।
पीहर के तो कुत्ते को भी छप्पन भोग जिमाये।
पत्नी के ऐसे भेदभाव से घर का उद्धार जरूरी है।
पति पत्नि के पावन रिश्ते में बहुत सुधार जरूरी है।
क्यूं सब हक पत्नि को, पति को भी कुछ अधिकार जरूरी है।

साड़ी, चूड़ी, बिंदी, लिपिस्टिक, क्रीम, पावडर लाये।
गाढ़ी कमाई का धन पत्नी फैशन में उड़ाये।
हर सप्ताह ब्यूटीपार्लर सजने संवरने जाये।
इत्र फुलेल की गंध से बदन अपना महकाये।
पति चाहे डूब मरे कर्ज में पर चंद्रहार (स्वर्णहार) जरूरी है।
पति पत्नि के पावन रिश्ते में बहुत सुधार जरूरी है।
क्यूं सब हक पत्नि को, पति को भी कुछ अधिकार जरूरी है।

मूवी, मंदिर, मेला, किटीपार्टी या जाना हो बाजार,

निढाल हो जाता थककर दर्पण (पति), घंटों में होती तैयार।
घर में मैली कुचली, (सड़ी सूगली) बाहर सोलह श्रृंगार जरूरी है।
पति पत्नि के पावन रिश्ते में बहुत सुधार जरूरी है।
क्यूं सब हक पत्नी को, पति को भी कुछ अधिकार जरूरी है।

पहली तारीख आते ही पूरा वेतन गिन लेती।
पति की कमाई ही पति को, रुलारुला कर देती।
पति को भी आधा खर्च करने का अधिकार जरूरी है।
बहुत सहा मेमना बनकर अब सिंह दहाड़ जरूरी है।
पति पत्नी के पावन रिश्ते में बहुत सुधार जरूरी है।

पत्नी से डांट, मार, फटकार, बेलन सब खाते हैं।
महिला आयोग के (जगहंसाई के) डर से बेबस चुप रह जाते हैं।
उत्पीड़न मुक्ति के लिये सामूहिक प्रतिकार जरूरी है।
बहुत सहा मेमना बनकर अब सिंह दहाड़ जरूरी है।
पति पत्नी के पावन रिश्ते में बहुत सुधार जरूरी है।

अबकी बार किसी दबंग पति को सत्ता में बिठलाओ।
पत्नियों के अत्याचारों से पतियों को मुक्त कराओ।
जो पुरुष आयोग बना दे ऐसी सरकार जरूरी है।
बहुत सहा मेमना बनकर अब सिंह दहाड़ जरूरी है।
पति पत्नी के पावन रिश्ते में बहुत सुधार जरूरी है।

गृहस्थी की गाड़ी को लंबे सफर पर ले जाना है।
समृद्ध सुसंस्कारित शिक्षित अपना परिवार बनाना है।
सुखी जीवन के लिये समन्वय और प्यार जरूरी है।
पति पत्नी के पावन रिश्ते में बहुत सुधार जरूरी है।
क्यूं सब हक पत्नी को, पति को भी कुछ अधिकार जरूरी है।

गीत हाड़ौती
सीताबाड़ी को मेळा मं।

म्हूं भी ग्यो सीताबाड़ी का मेला मं।
घणी भीड़ मली री आखा गेला मं।
मरद बायरां सूरजकुंड मं झकोळा खा र्या छा।
लक्ष्मण कुंड मं छोरा छोरी नांगा न्हा र्या छा।
थांकी काकी बछटगी ठेलमठेला मं।
म्हूं भी ग्यो सीताबाड़ी.
पच्चीस रुपया मं दाळ बाटी लारां कांदा लूण।
धाकाधीक मं जगरो कुराल्यो काचो र ग्यो चून।
डाक्टर न स्वाण द्यो लुगायां का भेळा मं।
म्हूं भी ग्यो.
चूड़ी बिंदी क्रीम पोडर अर नकली गैणा है र अ।
असली पड्या लॉकर मं ज्यांन खदी न फै र अ।
लडबा लाग्या लोग लुगाई गेला मं।
म्हूं भी ग्यो सीताबाड़ी.
सहरियां का छोरा छोरी जोड़ ढूॅढबा आवै।
जंच जावै मोड़ी नै तो रुमाल उठावै।
लगन मंड जावै व्हां को सामेला मं।
म्हूं भी ग्यो सीताबाड़ी का.
झूला चकरी हाळा घणी जोर सूं बल्ळा रया।
छोर्यां नचा बाळा झालो दे दे'र बला रया।
म्हूं बुढ्ढो न पड्यो यां का झमेला मं।
म्हूं भी ग्यो सीताबाड़ी का मेला मं।
वाल्मिकी सीता मां अर लवकुष यां फर'या।
धन्न भाग म्हांका भी पग आज यां पड्या।
लावै छै हाडक्या सळाबा लाल थैला मं।
म्हूं भी ग्यो सीताबाड़ी का मेला मं।
सुणी छी आम्बा जामु यां न'रा फळ छा।
अचार चरूंजी अ'र काचा आम म'ल छा।
उजाड़ रूंखड़ा मनख्यां न बेच्या धेला मं।
म्हूं भी ग्यो सीताबाड़ी का मेला मं।

हिन्दी व्यवहार की, अंग्रेजी बाहर की,
संस्कृत पूजा की, हाडौती परिवार की भाषा है

गजल

आंसू बहाना छोड़ दिया।

तस्वीर बसी है महबूब की आंखों में, काजल लगाना छोड़ दिया।
मोहब्बत डूब न जाये कहीं सैलाब में, आंसू बहाना छोड़ दिया।
मोहब्बत मिली आरजू मिली और मिली जिल्लत भी इस जमाने से।
जमाने से रुसवा हो जमाने से भाग, उसने जमाना छोड़ दिया।
जुबानों के खंजरो ने यूं दिये जख्म ज्यादा गहरे उनके जिगर को।
जमाने ने कबूल ली मोहब्बत उनकी, घर ने बुलाना छोड़ दिया।
गुनाह होता गर मोहब्बत करना तो खुदा क्यों हमें इक दिल देता।
खुदगर्जी के आलम में जमाने ने अब,
रब पर यकीन जताना छोड़ दिया।
न खता शमा की न पतंगों की न हुस्न की
न खता इश्क की न बहारों की।
जज्बातों को नादान जमाना न समझा, जिसने डराना छोड़ दिया।
इबादत जकात कुरानखानी नमाज हज कुरबानी है मोहब्बत।
इश्क में भूले मजार मौला दरगाह, चादर चढ़ाना छोड़ दिया।
गम भी हैं सितम भी और कांटे भी बिछे हैं इस मुश्किल राह में
दर्द सहना सीख जमाने से जख्मों पर, मरहम लगाना छोड़ दिया।
पथराई आंखों ने बैचेन दिल को अपना पैगाम कुछ यूं भेजा।
खता मेरी माफ करना ये दोस्त, मैंने पलकें झुकाना छोड़ दिया।
नहीं बचे हैं शहंशाह भी मोहब्बत की आतिश से इस जमाने में।
इसकी आगोश में आ सल्तनत के आगे, माथा झुकाना छोड़ दिया।
ना अंधेरा है ना उजाला है बस इश्क का नूर है इन आंखों में,
'बंसल' न होती है शाम न दिखती है रात, चराग जलाना छोड़ दिया।
तस्वीर बसी है महबूब की आंखों में, काजल लगाना छोड़ दिया।
मोहब्बत डूब न जाये कहीं सैलाब में, आंसू बहाना छोड़ दिया।

हाड़ौती गजल

बस्ता मं गुलाब कोई मेल ग्यो

बीणा का तार कोई छेड़ ग्यो री दारी।
कोरा कागज प स्याही फेर ग्यो री दारी
काची भींत प कूंची फेर ग्यो री दारी।
आंधण अस्यां ही घणो उफण र्यो छो।
चूल्हा मं बळीतो कोई गेर ग्यो री दारी।
आज ही न्हा धो'र मेड़ी छड़ी छी।
कांकरो फांक कोई छेड़ ग्यो री दारी।
डीळडा मं फूल ख'ल जाणै षूळ गड़ै।
बस्ता मं गुलाब कोई मे'ल ग्यो री दारी।
कुण आयो छानै से, बैरी छ्यो क मीत।
आला लीपणा प पग उगेर ग्यो री दारी।
पूनम को चांद म्हसूं आज घणो बळ् रयो।
म्हीं उ रात डागळी प देख ग्यो री दारी।
आकास न छी बा की मनमां आ'री छी।
बाण्णां का क्वांड कोई भेड़ ग्यो री दारी।
अटली मटली पव्वो अर पछीटा कोस्या
लाडी फूतळ्या कुण उधेड़ ग्यो री दारी।
म्हूं सैज्यां बीच बींद बींदणी मांडती।
सन्दौ ही गोबर कुण थेप ग्यो री दारी।
खट्टो खा बा ताई भागफाट्यां जागी।
कांकड़ की बोरड़ी कोई झेड़ ग्यो री दारी।
बीणा का तार कोई छेड़ ग्यो री दारी।
काची भींत प कूंची फेर ग्यो री दारी।

जा जा

हां म्हूं भ्रस्ट छूं थू कांई कर ले गो बोल जा जा।
सन्दा जाणै छै थू कांई खोलैगो पोल जा जा।
जे धरती होती थारै तो जाणतो म्हूं कांई छूं।
हाळी मजूर्या कांईं जाणै म्हारौ मोल जा जा।
मोदी आव क केजरीवाल या आव कोई और।
म्हां तो न बदलां बजा लै कतनो ही ढोल जा जा।
डील दूबळो भलां ही पण कलम हाथ मं राखूं छूं।

चक्कर खा जागो जै बैठूंगो पानड़ी खोल जा जा।
बना म्हां सूं मेळ मळायां सर्‌यो न कोई काम।
करावगो काम बना दाम पड़ जागी तोल जा जा।
यां काई सारा जग मं अस्यां ही सरक छ कागद।
काम बगड़ै 'बंसल' फांसै कानूनां की झोल जा जा।

छानौ रै

यो बदल्यो जमानो देख छानौ रै।
ईं मान विधाता का लेख छानौ रै।
चूंट्‌या सताया पग गरयाळा का
आज धर्‌या छाती प देख छानौ रै।
बालपणा सूं घणा सखाया बरज्या।
स्याणा होग्या भूल्या टेक छानौ रै।
छोरा छोरी चाल्यां आंथ्ण्यां आड़ी।
कुण चाल रियो थारी रेख छानौ रै।
बू बूट्‌यां फर री छ आधी उघाड़ी।
डियां फाड़ काईं मत देख छानौ रै।
बेटा पोता कर रिया छः मनमानी।
मत खाड़ै कोई मीन मेख छानौ रै।
स्याम पड़ी आंथ ग्यो सूरज थारो।
यां वां खै क बपदा मत झेल छानौ रै।
घट्‌टी फेरी रीती न ओर्‌यो नाज।
मत रो खाली पत्तर देख छानौ रै।
ये उडा रिया माल थारो जोंड्‌यो।
कुण तपै और कुण भोगे देख छानौ रै।
खल्या खोतल्या सोरी बालू रेत।
न रो 'बंसल' बांच करम रेख छानौ रै।

कुण छै

आधी रात मं हैलो पाड़ बाळो कुण छै।
काळी रातां का बागा फाड़ बाळो कुण छै।
पखेरु उड़ ग्या आपणौ दाणो ले परदेस।
वां घुसाळां सूं चोर्‌यां खाड़ बाळो कुण छै।
ऊपर सूं आवै छै जाणै क्हां जावै छै।
खुली आंख्यां सूं काजळ खाड़ बाळो कुण छै।
सींतमात्यां ही भर जावै झोळी मं मोती,
समंदर बीच नावां डाल बाळो कुण छै।
अंगूठा सूं ही कर लेगा दुनिया मुठ्‌ठी मं।

बळती बाळू प पावां चाल बाळो कुण छै।
कस्यां बचगो गौवंश गांव गळयारा को।
आज बैलां सूं खेतां न हांक बाळो कुण छै।
मल ही जावै छै मंजिलां चालता चालतां।
ईं आखी जूण बाट न्हाळ बाळो कुण छै।
या पीढी फंसी जरदा गुटकां का जाळ मं
तांशा पीसती बैठक छोड़ बाळो कुण छै।
न रो 'बंसल' देख दुरदसा यां मनख्यां की
म्हारा राम क सिवा संभाल बाळो कुण छै।

मसाण

कूख सूं चाली जात्रा को आखरी मुकाम छै मसाण।
सारा तीरथ होया फाछै आखरी धाम छै मसाण।
ई जग की राड़ बाड़ मं बळख बळख कट री छ डगरिया।
जिंदगाणी का सारा दुःख दरदां प विराम छै मसाण।
बळती चिता देख समझै स्याणां सौडै कोई गांव छैं।
जीती जागती बस्ती की सांची पछाण छै मसाण।
कोई आवै झूंपड़ी सूं कोई चंदन महला छोड़ां
बाळ बूळ राख करै सबक लेखै समान छै मसाण।
कोई फली कोई फाछै कोई तड़क कोई स्याम।
आगै फाछै सबकै आणौ अस्यो फरमान छै मसाण।
कोई धाका धीक मं कोई एड्यां रगड़तो फूगे।
कोई डुल जावै गेला मं उळझी ठाम छै मसाण।
पगां उगाण्यां फर्‌यो जीवतो, अब सणैसी सूतो जा।
चार कांधा पै मौजी खा बा को ही नाम छै मसाण।
पंच पटेलां बातां होवै सात जूण अर सद्‌लोक की।
अष्टावक्र मुनि अर राजा जनक को ग्यान छै मसाण।
बली महाबली भी रात बरात मं वां जाबा सूं डरफ
बाबा भूतनाथ का प्रेत पिसांच की ठाम छै मसाण।
हींदा मचौळा थम रया तांता टूट री सांसां डोर।
घट रीत्यो 'बंसल' तो सांच्या ही राम नाम छै मसाणA

तस (तृष्णा प्यास)

कसी बणाई राम न दारी तस, समन्दर सूं भी ऊंडी म्हारी तस।
सुख को भरम दिखा कै देवै दुःख, पाप करमां की महतारी तस।
तस पीसा, जस की, रुतबा की, राजपाट मळयां भी न्ह जारी तस।
पेट भरै पण खौल्ळी तस न मरै, तीन हाथ को डील जमारा री तस।
तन बूढ़े पण तस खदी न बूढ़े, हारी तो बस साता सूं हारी तस।
साधु महात्मा तप कर–कर हार्‍या, कोई मेनका आ'र जगारी तस।
सरग मातळो राख भाटा खा ग्या, कांई सूं भी न्ह मटी न्यारी तस।
ज्यूं ज्यूं पीवै सत, त्यूं त्यूं बधै तस, आसमान सूं डयोढी थारी तस।
भाई सूं भाई लड़ावै 'बंसल', नातां रिश्तां की हत्यारी तस।
कसी बणाई राम न दारी तस।

हाड़ौती मुक्तक

खड़ ही जावगी जगरा मं बाट्यां, भोभळ कुराळ क तो देख।
सोना सूं चमकगो जस थारो भी, काळज्यो बाळ क तो देख।

वीररस साहित्य न धरल्यो संभाल कर चौथा महायुद्ध मं काम आवगौ।
तीसरो महायुद्ध तो इंटरनेट प आंगल्यां सूं ही लड्यो जावगो।
जोश मं बटन जोर सूं दब ग्यों तो कम्प्यूटर ही टूट जावगो।
भुजा फड़कती रै जावगी राकेट घर म्ह ही फूट जावैगो।
मगज ठंडो राख बा क लेख शीर्षासन ध्यान जरूरी छ
ज्यादा उबळता लहू हाळो मुलक यूं लड़ाई हार जावगौ।

मनहर घनाक्षरी वार्णिक छंद 8 8 8 7 वर्ण चार पंक्ति

जय जय मां शारदे जय मां वीणावादिनी,
संसार सागर से मां तरणी मेरी पार हो।
शरणागत अबोध अज्ञानी तव सुत मां,
मानस में बस कर लेखनी संवार दो।
ज्ञान प्रदायिनी मां तू, विद्यादायिनी मां तू,
अज्ञान तिमिर हर ज्ञान का उपहार दो।
साहित्य सृजन कर सद्‌जन सेवा करूं,
नव छंद काव्य मेरे उर में उतार दो।

काक कहो न किसी को न ढोर मानो निज को,
शांत चित्त सुनें संत क्रोध नहीं करते।
सुख दुख रहें सम वीतरागी बनें हम,
आलोचना पर ध्यान विदुर नहीं धरते।
कर साहित्य सृजन पीर हरें हर जन,
श्रीमन्त यहां अशुद्ध भाव नहीं भरतें।
कुपित होकर ज्ञानी करे नहीं मनमानी,
काग के प्रलाप से न ढोर कहीं मरते।

मलिन है परिवेश व्यथित है सारा देश,
आपने जो किया वादा कुछ तो निभाइये।
नहीं करे नेता सेवा बना रहे सब मेवा
पकड़ बेइमानों को सबक सिखलाइये।
जनता को भाया नहीं काला धन आया नहीं,
फरार चल रहे वो अपराधी लाइये।
राजनीति गिर रही साख धूल मिल रही,
मोदी को पकड़ मोदी साख तो बचाइये।

लक्ष्मी बाई अभिमानी झांसी की वो महारानी,
मेरी झांसी नहीं दूंगी चंडी बिफर गई।
करके वीर श्रृंगार कर उठा तलवार
बैरियों को ललकार मौत संवर् गई।
पूत पीठ पीछे बांध कूद गई किला फांद,
किये वार तो दुश्मन सेना बिखर गई।
भेष धर मर्दानी कूदी समर क्षत्राणी,
हिन्दुस्तानी खड्ग का नाम कर गई।

बाबा नंदजी के प्यारे मां यशोदा के दुलारे,
बुलाया कंस ने जैसे काल की पुकार को।
गेप गोपी रोने लगी रथ आगे सोने लगी,
हंस हंस गिरधारी टाले तकरार को।
गेकुलवासी न डिगे धार आंसुओं से भीगे
अक्रूर और कान्हा की भूल मनुहार को।
मथुरा पहुंच कर न आये पलटकर,
भूल गये घनश्याम गोपियों के प्यार को।

याद करे पनघट ललनायें भरे घट,
रसरी हाथ में लिये और घड़ा लटकाये के।
बहू आये बेटी आये जल भरे या नहाये,
लाज से लाल हो जाती सखी बतियाये के।
खुर्दबीन से देखते शायर भी क्या फेंकते,
दिखाती फिरे कमर गौरी मुटियाये के।
फैशन रैम्प में चला उठा रहे जलजला,
चलती कमरिया को गौरी लचकाये के।

दोहे

1.रक्षासूत्र बांधकर, भगिनी सौंपे भार।
नशा मुक्ति संकल्प हो, राखी का उपहार।
2.रमाकांत ने दया कर, थामी जीवन डोर।
दुखों की रजनी बीती, हुई सुहानी भोर।
3.जूनी काया छोड दी, पाकर पीडा घोर।
नव जन्म पाकर हर्षित, हुई सुहानी भोर।
4.मालगांठ में देखकर, दुनियां जीमे भोग।
संकट में जो साथ दे, होते बिरले लोग।
5.लाभ देख हर्षित भये, मुरझाये दुर्योग।
सुखदुख में समभाव हो, होते विरले लोग।
6.कूदे लाने गेंद को, व्यथित मैया ग्वाल।
नाग कालिया नाथ के, प्रकट भये गोपाल।
7.टूटे ताले जेल के, पहरे हुये निढाल,
दुष्ट कंस के नाश को, प्रकट भय गोपाल।
8.दामोदर लीला करे, मिला चंद्र से ताल,
कालिंदी के कूल पर, रास रचे गोपाल।
9.परम पुरुष परमात्म है, मुकुट धर पंख मोर।
तव गोपियां खिजा रही, आया माखन चोर।
10.ग्वाल बाल संग में, कान्हा गाय चराय,
आये गइयन दौड के, मुरली मधुर बजाय।
11.गोप गोपियां सब नाचती, मन उल्लास भराय।
बृज रंगे हरि रंग में, मुरली मधुर बजाय।
12.मार लकुटी फोडी मटकी, दधि फैला चहुं ओर।
मुदित ग्वालिन देख रही, आया माखन चोर।
13.ग्वालन संग फोड रहे, मटकी नंद किशोर।
कान्हा को ही क्यों कहें, आया माखन चोर।

14.सत्यप्रकाश ज्ञान का, दे गिरधर गोपाल।
राजनीति व्यापार में बने माल ही माल।
15.मार न इसको कोख में, कन्या है वरदान।
हर संकट को टाल दे, बेटी की मुस्कान।
16.लाख घुटाले देख के, मत करियो तुम क्लेश।
फिर भी आगे बढ रहा, ऐसा अपना देश।
17.सत्य अहिंसा और दिया, पंचशील संदेश।
सकल जगत को ज्ञान दे, ऐसा अपना देश।
18.गंगा जमुना तीर पर, संतो ंके उपदेश,
जगत वेद गीता पढे, ऐसा अपना देश।
19.हारे का उपहास है, करे न कोई प्रीत।
गिरे हुये को देखकर, हंसना जग की रीत।
20.आतंकी की मार से, बहा सड़क पर खून।
बिना सबूत गवाह के, मौन हुआ कानून।
21.धनी रचित संविधान है, निजहित का मजमून,
मांगे रोटी रंक तो, मौन हुआ कानून।
22.वादे सब झूठे हुये, देगा कौन जवाब।
देख रहे हम आज भी, अच्छे दिन के ख्वाब।
23.रीति नीति बदली नहीं, दिखता वही रुआब।
मूरख तू भी भूल जा, अच्छे दिन के ख्वाब।
24.खींच रहे अब भी हमें, मदिरा और शबाब।
बाल रंग पूरे करें, अच्छे दिन के ख्वाब।
25.शासन ये बदला करें, दे जन जन को घाव।
ऐसी ताकत पा गये, आज प्याज के भाव।
26.काजू बादाम खा रहे, दे मूंछों पर ताव।
सुनकर मूर्छित हो गये, आज प्याज के भाव।
27.छोंक बिन डगमगा रही, गिरहस्थी की नाव।
शूल हिरदय चुभा रहे, आज प्याज के भाव।
28.माल कमाने के लिये, करते वणिक भराव।
सेठों को हरषा रहे, आज प्याज के भाव।
29.गणपति के त्यौहार पर, कुछ नया करें इस बार।
इक अनाथ गोपाल को, आओ कर लें प्यार।
30.ईश्वर ने दिये हमें, हाथ खोल उपहार।
वायु पानी जमीन को, आओ कर लें प्यार।
31.मानवता हित में लिया, विघ्न हरण अवतार।
उस परम पिता प्रभु को, आओ कर लें पर।

32.ठूंठ बनाया ईश ने, ना किस्मत में नार।
कोई पिल्ला तो मिले, आओ कर लें प्यार।
33.यदा कदा परिवार में, हो जाती है रार।
इक दूजे को माफ कर, आओ कर लें प्यार।
34.रूपशी षोडशी नहीं, बस सुंदर हो नार।
आलिंगन करके कहे, आओ कर लें प्यार।
35.चार नीति चाणक्य की, सबसे अच्छी प्रीत।
धर्म ज्ञान अरु प्रेम से, दुनिया को ले जीत।
36.इंटरनेट दिखा रहा, चलचित्र और गीत।
मोबाइल जो हाथ में, दुनिया को ले जीत।
37.सत्य अहिंसा त्याग है, हिन्द देश की रीत।
गीता वेद पुराण से, दुनिया को ले जीत।
38.जापे कृपा गुरु करे, माटी सोना होय।
घड़ घड़ सब मूरत भये, पाथर रहा न कोय।
39.मां शारदे लिखा रही, पकड़ कलम का हाथ।
ज्ञानी सब मूरख भये, पा सदगुरु का साथ।
40.धरती मां के गर्भ में मधुर फलों की खान।
गन्ना मीठा खूब है, करें अधर रस पान।
41.श्याम नाम में मन रमा, सुन बंशी की तान।
राधे राधे जाप से, करें अधर रस पान।
42.श्रृंगारित रमणी खड़ी, जगा रही है काम।
बंसल दोउ कपोल का, करें अधर रस पान।
43.तेरा कर्ज चुके नहीं, प्यार दिया भरपूर।
मां जी नहीं पाऊंगा, रह कर तुमसे दूर।
44.नारी तेरी छांह में, मर्द रहे मगरूर।
तुलसी दास संत भये, रह कर तुमसे दूर।
45.संकट में परिवार का, बना रहे विश्वास।
कंधे से कंधा मिला, प्रिया खड़ी हो पास।
46.चेहरे पर मुस्कान हो, बात करे बिंदास।
धन चाहे बेशक लुटे, प्रिया खड़ी हो पास।
47.मोदक मन में फूटते, बुद्धि चर जाये घास।
सुध बुध सब खो जात है, प्रिया खड़ी हो पास।
48.बीबी बातें जब करे, लगती है बकवास।
दिनभर बतियाते रहे, प्रिया खड़ी हो पास।
49.ऐसे घर में पैदा करे, तुझ को दयानिधान।
काजू ठंडाई घुटे, रोज चकाचक छान।

50.सास ससुर को मान दे, चतुर तू उसे जान।
घरवाली राजी रहे, रोज चकाचक छान।
51.देश देश में बज रहा, इस मेले का ढोल।
हाडौती पर छा गये, ये बारां के डोल।
52.कान्हा जलवा पूजते, उत्सव है अनमोल।
निकलें उनकी याद में, ये बारां के डोल।
53.मल्ल करतब दिखा रहे, जय बजरंगी बोल।
धूमधाम से उठ रहे, ये बारां के डोल।
54.धरोहर छ या आपणी, घणी घणी अनमोल।
घणां बरसां स खड रया ए बारां का डोल।
55.कान्हा कान्हा ही दिखे, ज्ञान चक्षु तो खोल।
नारायण की झांकियां, ये बारां के डोल।
56.मिसाल कौमी प्यार की, ये बारां के डोल।
हाजी–खान पिला रहे, पानी शरबत घोल।
57.पोला बांस बजा रहा, मेरा हिन्दुस्तान।
सारी दुनिया नाचती, सुन मुरली की तान।
58.राधे नाम कुंभ भरा, भाव भक्ति अरु ज्ञान।
सारे तीरथ छोड़कर, सुन मुरली की तान।
59.श्याम की दिवानी हुई, यह लल्ली वृषभान।
बरसाने से आत है, सुन मुरली की तान।
60.आरक्षण पर खिंच रही, आपस में तलवार।
डुबो रहे हैं देश की, नाव बीच मंझधार।
61.खा खा तर मुटिया रहे, हुकम उड़ाये बोस।
बीपी शूगर रोग हों, इसमें किसका दोष।
62.अपने हाथों कुछ नहीं, चला रहा करतार।
राम भरोसे छोड़ दी, नाव बीच मंझधार।
63.राजनीति इस देश का, करती बंटाढार।
तोड़े वोटों के लिये, दिल से दिल के तार।
64.राह नई बतला रहे, उंगली मेरी थाम।
दोहराज नाम दिया, उनको करूं प्रणाम।
65.यमुनाजी के तीर पर, मुदित भई बृजबाल।
चीर हरण लीला कर, मैया तेरो लाल।
66.तोड़ पाश नभ में उड़ो, करके सीमा पार।
सारा जग अपना लगे, खोलो मन के द्वार।
67.जसुमति आंगन पालने, झूले दीनदयाल।
बिशनू का अवतार है, मैया तेरो लाल।

68.सिरजन श्रम सज्जित करें, पड़ती पर ना पार।
सर्व सिद्धि यूं सध सके, खोलो मन के द्वार।
69.हत्या पर प्रतिबन्ध से, नहीं बच रही गाय।
गौपालन में लाभ हो, सोचो और उपाय।
70.मेरे जीवन में हुई, सबसे अच्छी बात।
बचपन में ही आ गई, कागज कलम दवात।
71.गांवडेल उपनाम धर, गीत रचे पांचाल।
गजनपुरा की शान है, दादा छीतरलाल।
72.हाड़ौती की गन्ध से, महकेगी चौपाल।
कवि सम्मेलन करा रहे, छीतरजी पांचाल।
73.क्षणिक क्रोध की आग है, मत खींचो दीवार।
थोड़ा समय गुजार कर, फिर से करो विचार।
74.दृढता से सच बोल तू, मुंह में मिश्री घोल।
बात न बनेगी जोर से, धीरे धीरे बोल।
75.आपसी फूट ने हमें, डंसा अनेकों बार।
भेदभाव का आज भी, उतरा नहीं बुखार।
76.भरती पेट अनाज दे, गोद उठाये भार।
इस धरती से भी मिले, हमको मां का प्यार।
77.सतजुग में मिलता रहा, कनक गज गाय दान।
कलजुग में किच किच करे, आज वही यजमान।
78.इतिहास यह बता रहा, भारत की पहचान।
सबसे पहला पाठ है, पुरखों का सम्मान।
79.भारतीय संस्कार का, बच्चों को दें ज्ञान।
धर्म ग्रंथ का पठन भी, पुरखों का सम्मान।
80.ब्राह्मण एक जिमा दिया, रखकर तिथि का ध्यान।
आजकल बस यही बचा, पुरखों का सम्मान।
81.वृद्धाश्रम में भेज दें, बाप नाकारा मान।
पश्चिम में होता नहीं, पुरखों का सम्मान।
82.दे वें गाल बजाये के, महापंडित प्रमाण।
नहीं गाते विदुर कभी, अपने गौरव गान।
83.अपने पंत प्रधान ने, छेड़ी ऐसी तान।
ओबामा भी गा रहे, अपने गौरव गान।
84.चार भाईल्यां बैठ कै, कर बा लागै बात।
बातां बीतै कोई न, बीत जावै छ रात।
85.समय समय पर बोलते, खट्टे मीठे बोल।
कड़ुआ भी बोल तो, वाणी में रस घोल।

86.नवरात्रों में बह रही, भक्ति रस की बयार।
गांव गली में सज रहे, माता के दरबार।
87.भक्त उतारें आरती, माता के दरबार।
कंठ कंठ से गूंजती, तेरी जयजयकार।
88.भाव भक्ति का भर हृदय, कर कर करुण पुकार।
भृत्य भव भान कर रहे, माता के दरबार।
89.नौ दिन की आराधना, कर दे बेड़ा पार।
ध्यान लगा कर बैठ तू, माता के दरबार।
90.पापों को मां भूलकर, कर लो अंगीकार।
भटका बेटा लौट कर, आया तेरे द्वार।
सर्प दोहा 48 लघु मात्रा
91.अधम दुरजन नरक परउ, सर कर धर लह शरण।
तव पग दरस करहु हरष, कर मम हिय तम हरण।
92.नीति अनीति रही नहीं, सिर्फ घात प्रतिघात।
हंगामा मकसद हुआ, लाख टके की बात।
93.लीला पूजन जागरण, या बांटो खैरात।
अठ पहर भजन राम का, लाख टके की बात।
94.सर्प दोहा बना लिया, घिस घिस कलम दवात,
भेजा और समय खपा, लाख टके की बात।
95.सोने की कीमत तभी, लोहे से पिट जाय।
रोशनी का उजास भी, तम से ही बढ पाय।
96.ऊपर चढने के लिये, इनकी है दरकार,
चमचों बिन होगी नहीं, तेरी जय जयकार।
97.अपराधी होते बरी, पहन घूस की खाल,
निर्धन रोता ही रहा, सच की गली न दाल।
98.अंधकार का आवरण, जीना करे मुहाल,
तड़प रही है रोशनी, सच की गली न दाल।
99.सनसनीखेज बना कर, खबर कमाये माल,
लालचियों के सामने, सच की गली न दाल।
100.सुत पढ़ लिख बाहर गया, बाप निभाया फर्ज।
बुढ़ापा अकेले कटे, बेटा भूला कर्ज।
101.हर युग में हर देश में, रहता भ्रष्टाचार,
पीड़ा होती भ्रष्ट को, जब मिलता सत्कार।
102.नियम बनाकर रोकिये, अनपढ़ का मतदान।
रुपया दारू की जगह, दे वे अक्षर ज्ञान।
103भ्रष्टाचार इस देश से, कैसे होवे दूर।

लालच में तो दे धनी, रंक हो कर मजबूर।
104.राजकोष की लूट को, कैसे रोकें यार,
बैठे चोर डकैत ही, बनकर पहरेदार।
105.अफसर नेता खेलते, भ्रष्टाचार का खेल,
कालाधन सब छीनकर, भेजो इनको जेल।
106.रुपया जेवर प्लाट या, अस्मत की उत्कोच।
रिश्वत दिये बिना यहां, उड़ने की मत सोच।

मुक्तक दोहा
1.राह मिलती सदा, जब मन में हो चाह।
सीखें मुक्तक छंद भी, आप दिखायें राह।
साहित्य सृजन का सफर, सदा रहे गतिमान
मार्गदर्शन में आपके, करें धर्म निर्वाह।
2.धौली प्रतीक राम की स्याह दैत्य की घात,
पूनम पर हावी न हो अंधकार की रात।
बाजी खेलें सोचकर हारे नहीं उजास,
चूक जरा भी हो कहीं, पल में होती मात।
3.शतरंज की बिसात पर करे घात प्रतिघात,
शातिर डूबे शौक में हुई सुबह से रात।
खाना पीना भूलकर लगे जमा कर ध्यान।
कोई चूके चाल तो पल में होती मात।
4.बद् पर सद् की जीत का आया है त्यौहार।
भार उतारो पाप का करो आत्म उद्धार।
विजयादशमी पर्व पर प्रण कर लें इस बार।
असत्य अहम् बढ़े नहीं मन का रावण मार।